

डॉ. एलेन फिलिप्स, ओल्ड टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 31, दक्षिणी राज्य के भविष्यवक्ता

© 2024 एलेन फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें।

स्वर्ग में हमारे पिता, हमारे अनमोल उद्धारक, सत्य की पवित्र आत्मा, जब हम झुकते हैं, तो हमें यह याद रखने में मदद करें कि आप कौन हैं, आपके बच्चे होने का कितना बड़ा सौभाग्य है, आपने हममें से हर एक को हमारी ज़रूरत के समय जो अद्भुत अनुग्रह दिया है। पिता, हम स्वीकार करते हैं कि हमें आपकी ज़रूरत है, खासकर तब जब हम पढ़ाई या किसी और तरह के बोझ से दबे हुए महसूस करते हैं।

हम आपकी कोमल देखभाल, मार्गदर्शन और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। पिता, हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि आज जब हम अध्ययन करें तो आप हमारे साथ मौजूद रहें। अध्ययन करते समय हम आपकी आराधना करें।

हमारे दिलों में आपको बेहतर तरीके से जानने की इच्छा जगे। पिता, हम अपनी पीढ़ी के लिए, अपने आस-पास के लोगों के लिए भविष्यवक्ता बनने की तैयारी करें। यह तैयारी उनके लिए प्यार और गहरी चिंता से बाहर हो।

पिता, हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करना जारी रखते हैं जो बहुत ही मुश्किल परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। हम चाहते हैं कि आप उनकी देखभाल करें। आज हमें आशीर्वाद दें। यहाँ हर एक को आशीर्वाद दें। हम ये चीज़ें मसीह के नाम पर धन्यवाद के साथ माँगते हैं, आमीन।

हम बस थोड़ा सा पुनरावलोकन करने जा रहे हैं क्योंकि, जैसा कि मैंने पहले कहा था, जब आप भविष्यवक्ताओं के बारे में सोचना शुरू करते हैं, खासकर परीक्षा के साथ, कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो मुझे लगता है कि आपके लिए मददगार होंगी जो प्रत्येक भविष्यसूचक संदेश के बारे में बताती हैं। अब, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ: ब्लैकबोर्ड पर उस सूची पर वापस जाएँ, किस भविष्यवक्ता ने यह किया, कौन सा भविष्यवक्ता वह था, और शुक्रवार की परीक्षा के लिए आने वाले लोगों के लिए भी इसका उपयोग करें।

लेकिन चलिए इसे आजमाते हैं। किस भविष्यवक्ता ने इजरायल को संबोधित करने से पहले राष्ट्र के गोल चक्कर की निंदा की थी? किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में हमने पिछली बार बात की थी। अमोस, ठीक है, अच्छा।

आप उसके बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहते हैं, लेकिन आप जानते हैं, यह भी एक तरह से महत्वपूर्ण है, है न? इस बारे में क्या ख्याल है? किस भविष्यवक्ता ने अपने बच्चों को प्रतीकात्मक नाम दिए? यिज़्रेल, प्यार नहीं, मेरे लोग नहीं। होशे, ठीक है। और फिर, योना की पुस्तक का उद्देश्य क्या था? यह एक तरह का व्यापक उद्देश्य है जिसका हमने वर्णन किया है।

हाँ, हर क्षेत्र में परमेश्वर की संप्रभुता के बारे में यह संदेश दें, लोगों को बचाने का उनका इरादा, भले ही वे इस्राएली न हों। दूसरे शब्दों में, निनवे के प्रति उनकी दया, और प्राकृतिक क्षेत्र पर उनकी संप्रभुता। यह सिर्फ़ समीक्षा के लिए थोड़ा सा है।

आज हमें दक्षिण के हमारे भविष्यवक्ताओं के बारे में बहुत कुछ करना है। हम अपना ज़्यादातर समय, ज़ाहिर है, यशायाह पर खर्च करने जा रहे हैं। लेकिन हम मीका के बारे में भी बात करना चाहते हैं क्योंकि मीका यशायाह के समकालीन हैं।

वह दक्षिणी राज्य के थोड़े अलग हिस्से में रहता है। यशायाह यरूशलेम में स्थित है। मीका शेफेला में बाहर रहने वाला है।

क्या यह जानना मज़ेदार नहीं है कि शेफेलाह एक भविष्यवक्ता को समझने के मामले में दिलचस्प है? और फिर हम जोएल के बारे में बात करेंगे। मुझे लगता है कि जब हम यह पता लगा रहे थे कि कौन सा भविष्यवक्ता किससे बात कर रहा था, तो हम पूरी तरह से निश्चित नहीं थे कि जोएल ने कब भविष्यवाणी की थी। लेकिन यह एक अच्छा अनुमान है कि यह दक्षिणी राज्य के पतन से ठीक पहले का समय हो सकता है।

तो, हम आज उसे भी यहाँ शामिल करने जा रहे हैं। सबसे पहले, यशायाह, आप जानते हैं, यशायाह बहुत सारे कारणों से अद्भुत है। मुझे उम्मीद है कि आज मैं आपके लिए उसके बारे में थोड़ा बता पाऊँगा।

लेकिन यह महत्वपूर्ण है, सिर्फ़ उन सभी भविष्यवक्ताओं के दृष्टिकोण से जिन्हें नए नियम में उद्धृत किया गया है। अनुमान लगाइए कि सबसे ज़्यादा दर किसकी है, ठीक है? नए नियम में किसी भी अन्य भविष्यवक्ताओं की तुलना में यशायाह को अधिक बार उद्धृत किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि यशायाह मृत सागर स्क्रॉल में भी एक हाई-प्रोफ़ाइल चरित्र है। आप में से जो लोग मृत सागर स्क्रॉल के बारे में कुछ भी जानते हैं, उनके लिए यह यरूशलेम से लगभग 12 मील पूर्व में, कुमरान नामक स्थान पर मृत सागर के किनारे पांडुलिपियों की एक बहुत ही महत्वपूर्ण खोज है।

उन स्क्रॉल में काफी संख्या में बाइबिल के पाठ हैं, या कम से कम बाइबिल के पाठ के कुछ अंश हैं। यशायाह की कई प्रतियाँ वहाँ दिखाई देती हैं, लेकिन यह अन्य सभी, पूरे स्क्रॉल के बारे में सच नहीं है।

इसके अलावा, मृत सागर समुदाय से यशायाह के बारे में बात करने वाली कुछ टिप्पणी सामग्री बची हुई है। तो, आपको यह आभास होता है कि यशायाह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। और निश्चित रूप से, हम आज इस पर काम करते हुए यह समझने की कोशिश करेंगे कि ऐसा क्यों हो सकता है।

यशायाह के बारे में सबसे पहले हमें ऐतिहासिक संदर्भों पर चर्चा करनी है। और मेरे पास यह बहुवचन में है। मैं आपको अध्याय एक, श्लोक एक पढ़कर सुनाता हूँ।

मुझे लगता है कि आपने यह पहले ही पढ़ लिया होगा। मुझे वहाँ मुड़ जाना चाहिए था। अभी तक नहीं मुड़ा हूँ।

धीरे-धीरे वहाँ पहुँचना। दृष्टि।

ध्यान दें कि यहाँ एक और उदाहरण है जहाँ यशायाह देख रहा है, और वह काफी उल्लेखनीय रूप से देख रहा है। यह एक हज़ोन है। याद रखें कि अहोज़ वह व्यक्ति था जिसने आपके कंप्यूटर स्क्रीन के दूसरी तरफ क्या देखा, अगर मैं इस दृष्टिकोण से देखूँ।

किसी भी तरह से, यहूदा और यरूशलेम के बारे में जो दर्शन यशायाह ने उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह राजाओं के शासनकाल के दौरान देखा था, वह यही है। जब हमने ऐतिहासिक काल के बारे में बात की थी, तो मैंने आपको सुझाव दिया था कि यहूदी परंपरा के अनुसार, ऐसा लगता है कि मनश्शे के अधीन परमेश्वर के लोगों के इस भयानक सफाए के दौरान यशायाह को शहीद कर दिया गया था। तो, यशायाह ने बहुत लंबे समय तक भविष्यवाणी की।

अब, हमें इस बारे में थोड़ी बात करनी चाहिए। उज्जियाह, हमारे पास योताम, आहाज, हिजकिय्याह और हिजकिय्याह के बारे में कुछ तिथियाँ हैं, जो लगभग 685 तक हैं। खैर, यह सब ठीक है और अच्छा है।

और फिर, बस समय की लंबाई को ध्यान में रखें। हम थोड़ी देर बाद इस पर वापस आएंगे। लेकिन दूसरी बात जो मैं आपको बताना चाहता हूँ वह यह है कि जैसा कि आप आगे देख रहे हैं, हमारे पास एक बदलाव है।

जब यशायाह जीवित था, यानी, इन तिथियों पर जो यहीं हैं, प्रमुख विदेशी खतरा अशशूर था, है न? एक प्रमुख विदेशी खतरा अशशूर है। हमने देखा कि हिजकिय्याह के साथ, हिजकिय्याह सुरंग का निर्माण कर रहा था, दीवारों का पुनर्निर्माण कर रहा था, और यरूशलेम की रक्षा कर रहा था, और हम चिंतित थे कि सन्हेरीब कब्ज़ा करने जा रहा था। यशायाह के जीवनकाल के दौरान अशशूर प्रमुख खतरा था।

हालाँकि, यशायाह के दूसरे भाग में, मुख्य खतरा बेबीलोन है। इसके अलावा, हमारे पास साइरस नामक किसी व्यक्ति का उल्लेख है, जिसका नाम यशायाह की पुस्तक में उल्लेख किया गया है। अध्याय 44 के अंत में और अध्याय 45 की शुरुआत में, परमेश्वर, यशायाह के माध्यम से बोलते हुए, साइरस, मेरे अभिषिक्त का उल्लेख करता है, जो यरूशलेम को पुनर्स्थापित करने जा रहा है, ठीक है? इसलिए, हमारे ऐतिहासिक संदर्भ यहाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

यशायाह इस समय-सीमा में बोल रहा है, जिसे मैंने तिथियों के लिए ऊपर रखा है, लेकिन वह बहुत आगे की ओर देख रहा है, न केवल बेबीलोन और कैद से वापसी की ओर, बल्कि एक नाम का भी उल्लेख कर रहा है, और वह नाम है फारस के राजा साइरस का, जिसने यह आदेश दिया। और हम अगले सप्ताह बाद में इस बारे में बात करने जा रहे हैं। साइरस ने आदेश दिया कि लोगों को यरूशलेम वापस आना है।

अब, बेशक, यह क्या कर रहा है? यशायाह बहुत स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी कर रहा है, है न? वह सिर्फ सामान्य रूप से नहीं कह रहा है, ठीक है, आप जानते हैं, आप शायद निर्वासन से वापस आने वाले हैं जिसमें आप जा सकते हैं। वह साइरस नाम के किसी व्यक्ति के बारे में कह रहा है। 539 में यह आदेश लागू होता है।

यह यशायाह के जीवित रहने के समय से कालक्रम के हिसाब से बहुत दूर की बात है। और निश्चित रूप से, यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जो चमत्कारी घटनाओं, जैसे कि भविष्यवाणियों, और इस तथ्य पर विश्वास नहीं करते हैं कि ईश्वर वास्तव में ऐसा कर सकता है और अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से इन चीजों को प्रकट कर सकता है, तो आप कह सकते हैं, ठीक है, किसी और ने इसे लिखा है। और यह हमें, उफ़, यह हमें एक मानचित्र पर ले आता है।

मैं भूल गया कि नक्शा यहाँ था। यह सिर्फ आपको याद दिलाने के लिए है कि असीरिया कहाँ स्थित है। आप यह सब जानते हैं।

जब तक इज़राइल आएगा, तब तक मेरा इशारा यहीं कहीं है। माफ़ करें, जब तक इज़राइल आएगा। जब तक यशायाह आया, तब तक हमने देखा कि अशूरियों ने उत्तरी राज्य, जो कि इज़राइल था, पर बहुत स्पष्ट रूप से कब्ज़ा कर लिया था, और फिर यरूशलेम की घेराबंदी कर दी थी।

और इसलिए, यह पूरा क्षेत्र कमजोर होने जा रहा है, मैं क्या कहने की कोशिश कर रहा हूँ, उस समय तक अस्तित्व में था। ठीक है, अब चलिए आगे बढ़ते हैं कि मैं क्या करना चाहता था। आप जानते हैं, ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें बाइबिल के विद्वानों ने पुराने नियम में चीजों को देखा है, और उन्होंने कहा है, लड़का, आप जानते हैं, मुझे यकीन नहीं है कि इस व्यक्ति ने इस पुस्तक को लिखा है।

जब हमने इस बारे में बात की कि पेंटाट्यूक को किसने लिखा होगा, मुसा ने या किसी और ने, तो हमें इस पर थोड़ा-बहुत विचार करना पड़ा। ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ ये सवाल उठाए गए हैं। यशायाह शायद सबसे प्रमुख उदाहरण है।

अन्य भी हैं, लेकिन यशायाह इसका सबसे बढ़िया उदाहरण है। इसका कारण यह है कि विद्वानों ने पाठ पढ़ा और देखा कि मैंने अभी आपको क्या बताया। उनके दिमाग में, यशायाह ने उन दो आयतों को नहीं लिखा होगा, अध्याय 44 का अंत और अध्याय 45 की शुरुआत, जिसमें विशेष रूप से साइरस का नाम है।

उनके दिमाग में, यशायाह ने ये नहीं लिखा होगा। क्योंकि 700 या 600 के दशक में रहने वाला कोई व्यक्ति कैसे आगे की ओर देख सकता है और किसी ऐसे व्यक्ति का नाम ले सकता है जो 539 तक दिखाई भी नहीं दिया और अपना फरमान जारी कर सकता है, ठीक है? यही उनके लिए समस्या है। और इसलिए मैं आपको इसका एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ।

इस देश में हर जगह अंडरस्टैंडिंग द बाइबल नामक किताब का इस्तेमाल किया जाता है। संयोग से मेरे पास इसका दूसरा संस्करण भी है। यह पहले ही अपने सातवें संस्करण तक पहुँच चुका है।

तो, यह एक काफी अच्छी तरह से इस्तेमाल किया गया पाठ है। और यह बाइबल का एक परिचय है, एक पाठक का परिचय। और मैं आपको इस लेखक के बारे में कुछ पैराग्राफ पढ़कर सुनाता हूँ, जो आम राय को दर्शाता है, ठीक है, यह लेखक यशायाह के बारे में क्या कहता है।

भविष्यवाणियों की पुस्तकों में सबसे प्रमुख है यशायाह की पुस्तक। मैंने अभी आपको भी यही समझाने की कोशिश की है, जिसमें विश्व साहित्य के कुछ सबसे ऊँचे विचार और सबसे यादगार कविताएँ मौजूद हैं। मैं इससे सहमत हूँ।

हालाँकि, यह कोई एकीकृत कार्य नहीं है, बल्कि कई वर्षों में लिखे गए कई भविष्यवाणियों का संकलन है। खैर, आप जानते हैं, ठीक है, यशायाह का लेखन, मैं कहूँगा कि 40 वर्षों की अवधि में लिखा गया, इसलिए कई वर्षों में लिखा गया, कोई समस्या नहीं है। यशायाह के 66 अध्यायों का विश्लेषण करने वाले विद्वान आम तौर पर इस बात पर सहमत हुए हैं कि पुस्तक को कम से कम तीन अलग-अलग भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रत्येक भाग, अब यहाँ एक ऐसा स्थान आता है जहाँ मैं संभवतः इस लेखक के साथ कंपनी को अलग कर दूँगा। प्रत्येक भाग एक अलग समय अवधि और एक अलग लेखक का प्रतिनिधित्व करता है। पहले 39 अध्याय, 24 से 27, 33 से 35 और 36 से 39 को छोड़कर, क्या आपने इसे देखा? हम 11 अध्यायों को तुरंत छोड़ रहे हैं क्योंकि, दुर्भाग्य से, वे बेबीलोन और कुछ अन्य चीजों का उल्लेख करते हैं, ठीक है।

लेकिन किसी भी स्थिति में, पहले 39 अध्यायों को, उन अपवादों के साथ, मुख्यतः यरूशलेम के यशायाह की रचना माना जाता है, जिन्होंने लगभग 742 और 700 के बीच भविष्यवाणी की थी। उन्होंने यहाँ इसे थोड़ा संक्षिप्त किया है, जब असीरियन साम्राज्य ने इस्राएल को निगल लिया था और यहूदा को भी धमकी दी थी।

ठीक है, तो यह खंड एक है। अध्याय 40 से 55 तक एक ऐतिहासिक स्थिति प्रस्तुत करते हैं जिसमें असीरिया नहीं, बल्कि बेबीलोन हावी है। आम बोलचाल में, यह दूसरा यशायाह है।

इसलिए, यदि आप कभी यशायाह की पुस्तक के बारे में कुछ पढ़ रहे हैं और आपने दूसरा यशायाह पढ़ा है, तो आप जानते हैं कि लेखक का क्या कहना है। उसने इस पूरी बात पर विश्वास कर लिया है कि यह बाद में लिखा गया है। अध्याय 39 के बाद यशायाह का चरित्र प्रकट नहीं होता है।

शैली में उल्लेखनीय अंतर - उस पर ध्यान दें; मैं इसके बारे में थोड़ी देर में बात करने जा रहा हूँ। शैली, शब्दावली और धार्मिक दृष्टिकोण से पता चलता है कि एक नया लेखक काम कर रहा है। अध्याय 56 से 66 ईसा पूर्व 8वीं से लेकर 5वीं शताब्दी के आरंभ तक के भविष्यवाणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कि लगभग भविष्यवाणी का पूरा युग है।

विद्वान् आमतौर पर यशायाह के तीन प्रमुख विभागों में से प्रत्येक को अलग-अलग साहित्यिक इकाइयों के रूप में मानते हैं। वह इसके बारे में थोड़ा और बात करता है। तो, आपको बात समझ आ गई, है न? आप साइरस का उल्लेख करने के बारे में इस बात से निपटते हैं।

अब, ध्यान दें कि उन्होंने इस बारे में कभी कुछ नहीं कहा। लेकिन यही अंतर्निहित समस्या है। आप इसे यह कहकर सुलझा सकते हैं कि, ठीक है, पाठ के विभाजन।

अनुमानित लेखक और तिथियाँ, मैंने अभी आपको बताया है कि वे क्या हैं। और हमारा मुख्य भाग, अध्याय 40 से 55, 8वीं शताब्दी के विपरीत 6वीं शताब्दी के आसपास कहीं आ रहा है। दूसरे शब्दों में, जब दुनिया का कोई भी डोडो साइरस को देखकर कह सकता था, ओह हाँ, मुझे यकीन है कि वह एक फरमान जारी करने जैसा कुछ करने जा रहा है।

आइए हम सब कुछ लिख लें और इसे भविष्यवाणी कहें। मुझे खेद है, मैंने इसे थोड़ा व्यंग्यात्मक बना दिया है, लेकिन आप समझ गए होंगे कि यह क्या है। आइए इस बारे में थोड़ी बात करें।

और, आप जानते हैं, मैं शुरू से ही यह बात कह देना चाहता हूँ। मैं आज 40 मिनट में यशायाह से निपटूंगा। डॉ. विल्सन की भविष्यवाणी साहित्य कक्षा को ही लें, जहाँ वह वास्तव में इनमें से कुछ चीजों को इतनी गहराई से खोजते हैं जितना हम इस विशेष संदर्भ में कभी नहीं कर सकते।

पुराने नियम को आपको एक सिंहावलोकन देने के लिए लिखा गया है। लेकिन ऐसी कई अन्य कक्षाएँ हैं जिन्हें आप पढ़ सकते हैं, और डॉ. विल्सन की भविष्यसूचक साहित्य कक्षा एक ऐसी कक्षा है जिसे आपको नहीं छोड़ना चाहिए, भले ही आप बाइबल के विशेषज्ञ न हों। यह एक ऐसी कक्षा है जिसे कई कारणों से लिया जाना चाहिए।

किसी भी हालत में, वह यशायाह से निपटेगा। आइए उस उद्धरण के बारे में थोड़ी बात करें जो मैंने आपको स्टीफन हैरिस की किताब से पढ़कर सुनाया, जहाँ वह कह रहा है कि यह स्पष्ट है कि हम शैली, विषय-वस्तु और धार्मिक दृष्टिकोण में अंतर के कारण विभिन्न लेखकों के बारे में बात कर रहे हैं। और फिर, यह ध्यान में रखते हुए कि वह असली लाल झंडा नहीं उठाता है, जो कि साइरस का उल्लेख है।

सबसे पहले, यह एक सरल उत्तर है, लेकिन चलिए कम से कम इसके बारे में थोड़ी बात तो करते हैं। यशायाह 40 साल से भविष्यवाणी कर रहा है। वह उस समयवधि में लिख रहा है।

रुकें और इसके बारे में सोचें। नीतिवचन की इस कक्षा के लिए आपने जो कागज़ लिखा था, उसे संभाल कर रखें और जब आप 60 वर्ष के हो जाएँ, तब उसे बाहर निकालें। और देखें कि क्या यह उस तरह के लेखन को दर्शाता है जो आप 60 वर्ष की उम्र में कर रहे हैं।

मैं मान रहा हूँ कि आप अभी भी कुछ लिख रहे होंगे। कॉलेज के छात्र के रूप में मैंने जो लिखा था, वह बिल्कुल भी वैसा नहीं है जैसा मैं अभी लिख रहा हूँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि किताब के आखिरी हिस्से में इसाईया एक घटिया लेखक से एक बेहतरीन लेखक बन जाता है, लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि मानवीय दृष्टिकोण से, यहाँ कुछ बदलाव होने वाले हैं।

याद रखें, पवित्र आत्मा नबी के व्यक्तित्व को दबाता नहीं है, या नबी की उम्र को भी नहीं। इसके बजाय पवित्र आत्मा उस व्यक्ति का उपयोग दी गई परिस्थितियों में करता है। और इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि समय के साथ लेखन की शैली, शब्दावली, धार्मिक दृष्टिकोण में कुछ बदलाव होंगे।

बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं है। और खासकर अगर हमारे पास परमेश्वर पवित्र आत्मा है जो हमें कुछ विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रेरित कर रहा है, जो परमेश्वर पवित्र आत्मा के पास है, जो हमें बिंदु दो पर ले जाता है। जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो आप भविष्यवाणी साहित्य पढ़ते समय कभी भी इतिहास की दृष्टि नहीं खो सकते।

मुख्य समस्या, मुख्य समस्या, वह चीज़ जिस पर परमेश्वर ने बार-बार आक्रमण किया, वह थी उनकी आध्यात्मिक व्यभिचार। होशे को याद करो? दूसरे शब्दों में, मूर्तिपूजा। यही संकट है।

यही हम पढ़ रहे हैं, खास तौर पर किंग्स--2 किंग्स। ये लोग दूसरे देवताओं के पीछे वेश्यावृत्ति करते रहे। यह एक बहुत बड़ा संकट है।

दिलचस्प बात यह है कि, और हम इसे एक मिनट में देखेंगे, यशायाह अध्याय 40 से 45, किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा, मूर्तिपूजा की कड़ी निंदा करते हैं। और अगर आपने इसे पढ़ा है, तो आप जानते हैं कि यह वहाँ है। अब, यहाँ क्या दिलचस्प है।

निर्वासन के बाद, जब यह समाप्त होने वाला है और जब वे वापस अपने देश लौट रहे हैं, तब भी मूर्तिपूजा कोई बड़ी समस्या नहीं है। उनके मन और दिल से मूर्तिपूजा का सफ़ाया हो चुका है। उन्होंने निर्वासन में 70 साल बिताए हैं।

वे जानते हैं कि निर्वासन उनके द्वारा किए गए कामों के कारण था। उन्हें मूर्तिपूजा के बारे में किसी बड़े, लंबे उपदेश की आवश्यकता नहीं है। उन्हें दंडित किया गया है।

और इसलिए, अध्याय 40 से 55 को उस समय का मानना कोई मतलब नहीं रखता जब मूर्तिपूजा कोई मुद्दा नहीं था। क्या मैं इस पर अंग्रेजी बोल रहा हूँ? अगर आप अभी जो कह रहे हैं उससे कुछ और नहीं समझ पा रहे हैं, तो पहचानें कि यह इस दावे का विरोध करने का एक प्रमुख तरीका है कि यशायाह को अलग-अलग खंडों में विभाजित किया जा सकता है, और यह बाद में लिखा गया है। अगर यशायाह इतना समय बिताने जा रहा है, और हम इनमें से कुछ अंशों को देखने जा रहे हैं, तो वह उन लोगों को कड़ी फटकार लगा रहा है जो मूर्तियों की पूजा करते हैं।

आप जानते हैं, अगर यह कोई समस्या नहीं है तो इसका कोई महत्व नहीं है। इसका कोई महत्व नहीं है। ठीक है, और बिंदु दो बिंदु तीन की ओर ले जाता है।

मूर्तिपूजा की इस तीखी निंदा के अंत में यशायाह ने कुसू का ज़िक्र किया। लेकिन उससे पहले उसने जो कहा, वह यह है कि देखो, प्रभु परमेश्वर अंत से लेकर शुरुआत तक सब कुछ जानता है। अगर आपने यशायाह के अध्याय 40 से 45 तक पढ़े हैं, तो आप यह जानते होंगे।

ईश्वर आरंभ है, वह अंत करता है, वह अंत से आरंभ को जानता है, वह वही है जो कहता है कि कुछ होगा, और वह होता है। और यशायाह कह रहा है, उस तरह से प्रभुता संपन्न प्रभु आपकी मूर्तियों के विपरीत है जिन्हें आप इतनी मूर्खता से बना रहे हैं और पूज रहे हैं। ठीक है, वे नहीं कर सकते, वे गूंगे हैं, वे अंधे हैं, वे बहरे हैं, वे ये काम नहीं कर सकते, वे लकड़ी और धातु की वस्तुएँ हैं।

भगवान भविष्य बता सकते हैं, लेकिन मूर्तियाँ नहीं। और फिर वह कहते हैं, ऐसा नहीं कहते, लेकिन यहाँ परेड उदाहरण है। साइरस का उल्लेख इसे स्पष्ट करने के लिए है।

जो लोग यशायाह की किताब पढ़ रहे होंगे और उनके दिमाग में यह परंपरा होगी, 150 साल बाद भी जब यह वास्तव में घटित होगी, तो वे कहेंगे, ओह हाँ, हमारे पास एक भविष्यवक्ता था जिसने ऐसा कहा था। यह भगवान के बारे में कुछ होना चाहिए। ठीक है? और फिर दिलचस्प बात यह है कि भले ही हमारे आलोचक यह कहते हैं कि वही धार्मिक विषय प्रकट नहीं होते हैं, लेकिन वे प्रकट होते हैं।

पूरे पाठ में परमेश्वर को इस्राएल का पवित्र कहा गया है। इसका उल्लेख 25 से ज़्यादा बार किया गया है। और यह सिर्फ़ एक भाग में नहीं, बल्कि दोनों भागों में है।

ठीक है? दोनों भागों में मंदिर का उल्लेख है। और इसलिए, कुछ प्रमुख विषय जो इस्राएल और परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, वे पूरी पुस्तक में दिखाई देते हैं। अब, इसके बारे में और भी बहुत कुछ कहना है।

और इसलिए, मैं आपको डॉ. विल्सन की क्लास लेने के लिए प्रोत्साहित करूँगा। अब, कोई सवाल? मैं वास्तव में चाहता हूँ कि आप मूर्तिपूजा के मुद्दे को समझें। यहाँ यही सबसे बड़ी कुंजी है।

हाँ, रेबेका? क्या आप बस इतना कह रहे हैं कि... दो जो वास्तव में एक ही विषय और अभिव्यक्ति के संदर्भ में प्रमुख हैं, वे दोनों खंडों, दोनों भागों और पुस्तक के सभी तीन भागों में अपना रास्ता बनाते हैं। सबसे पहले, परमेश्वर को इस्राएल का पवित्र कहा जाता है। यह कभी नहीं बदलता।

ठीक है? तो, या तो आप कहते हैं कि आठवीं शताब्दी में यशायाह खुद इसका इस्तेमाल कर रहे थे, और फिर आपके पास यशायाह का यह गुमनाम स्कूल है जो इसे उठाता है और इसे पसंद करता है, और फिर तीन शताब्दियों के बाद के कई भविष्यवाणियों में भी यही बात है। मेरा मतलब है, यह संभव है, लेकिन कम से कम यह अधिक समझ में आता है। दूसरा मंदिर है।

मंदिर का विचार पहले भाग में और फिर उस बहुत स्पष्ट अंश में दिखाई देता है जिसे यीशु यशायाह अध्याय 56 से उद्धृत करने जा रहे हैं, साथ ही अन्य में भी। सारा? क्या इस्राएल के लोग अभी भी अशेरा पूजा में पर्दे में गिर रहे हैं, या वे कई अलग-अलग लोगों से प्रभावित हैं? क्या आप लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जब? यशायाह के समय के दौरान? यह सब वहाँ है। हाँ, यह सब वहाँ है।

अगर वह उसी समय जी रहा है जब उत्तरी राज्य गिर रहा है, तो क्या आपको 2 राजा 17 याद है, जहाँ हर संभव चीज़ की पूजा की जा सकती थी, वे पूजा करते हुए प्रतीत होते हैं? तो, यह सब उस एक बड़े, गंदे, समन्वयवादी, बदसूरत सामान में है। हाँ।

क्षमा करें, चेल्सी। खैर, मेरा सुझाव है कि उन्होंने अब अपने 70 साल निर्वासन में बिताए हैं, और वे जानते हैं कि अगर वे टोरा को सुन रहे हैं, तो उन्हें निर्वासन में ले जाने का कारण उनकी मूर्तिपूजा है। यही बात भविष्यवक्ता की आवाज़ हमेशा से कहती रही है, बार-बार।

यह घर पर ही जोर देने जैसा है। और इसलिए दिलचस्प बात यह है कि जब आप एज़्रा और नहेमायाह को पढ़ते हैं, तो वहाँ कुछ चेतावनियाँ हैं, लेकिन मूर्तिपूजा के खिलाफ़ कोई सख्त चेतावनी नहीं है। अभी तक नहीं।

यह फिर से सामने आने वाला है। और नहेमायाह उन्हें अंतर्जातीय विवाह करने के खिलाफ़ चेतावनी देने जा रहा है, ताकि वे इस पैटर्न में न फँस जाएँ। लेकिन आपके पास मूर्तियों और मूर्तिपूजा के बारे में वह लगातार ढोल नहीं है जो पहले से ही स्पष्ट है।

ट्रेवर। तो, आप बस यही कह रहे हैं कि 8वीं सदी के संदर्भ में मूर्तिपूजा की निंदा करना ज़्यादा उचित है। हाँ।

क्योंकि यह निर्वासन की ओर ले जाता है, निर्वासन से वापस आने के विपरीत। हाँ, यह बहुत अधिक समझ में आता है क्योंकि उस समय मूर्तिपूजा उनके लिए एक बहुत बड़ा खतरा थी। और, आप जानते हैं, टोरा ने कहा, यदि आप वेश्यावृत्ति करना जारी रखते हैं, तो भूमि आपको बाहर निकाल देगी।

लेविटिकस में इस बारे में विशेष रूप से बात की गई है, जैसे कि इसने अपने पूर्व निवासियों को उल्टी करके बाहर निकाल दिया। तो हाँ, यह बिल्कुल सही है। बढ़िया।

समझे? चलिए थोड़ा आगे बढ़ते हैं। यह वहीं से शुरू होता है जहाँ से हमने छोड़ा था। यहाँ परमेश्वर बहुत स्पष्ट रूप से बता रहा है कि वह कौन है।

और हम परमेश्वर की इस सर्वोच्च और अद्वितीय प्रकृति को उठाएंगे। फिर से, हम आगे और आगे जा सकते हैं, एक के बाद एक अंशों को देखते हुए क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। लेकिन, बस मैं आपको उस निंदा का थोड़ा सा हिस्सा पढ़कर सुनाता हूँ जिसके बारे में मैं अभी बात कर रहा था।

क्योंकि आप देखिए, यशायाह यहाँ बहुत व्यंग्यात्मक है। ऐसा मत सोचिए कि भविष्यवक्ताओं के पास अपनी विडंबनाएँ और व्यंग्य नहीं हैं। मैं पूरी बात नहीं पढ़ूँगा, लेकिन यहाँ इसका स्वाद है।

यह अध्याय 44 है, जो छठी आयत से शुरू होता है। यह वही है जो प्रभु कहते हैं। इस्राएल के राजा और उद्धारक, सर्वशक्तिमान प्रभु।

शीर्षक समझ में आ गए? यह शायद काफी महत्वपूर्ण प्रवचन है। और अब, देखते हैं। मैं पहला हूँ, और मैं अंतिम भी हूँ।

मेरे अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। तो फिर मेरे जैसा कौन है? उसे यह घोषणा करने दो। उसे यह घोषणा करने दो।

वह मेरे सामने यह बताए कि जब से मैंने अपने लोगों को स्थापित किया है, तब से क्या हुआ है और क्या होने वाला है। हाँ, वह भविष्यवाणी करे कि क्या होने वाला है। क्या आप समझ रहे हैं? प्रभु, यशायाह के माध्यम से बोलते हुए, यहाँ मंच तैयार कर रहे हैं और कह रहे हैं कि अगर कोई वास्तव में ईश्वर है, तो वह भविष्य बता सकता है।

वह भविष्यवाणी करे कि क्या होनेवाला है। डरो मत, डरो मत। क्या मैंने बहुत पहले से इसकी घोषणा नहीं की थी और इसकी भविष्यवाणी नहीं की थी? तुम मेरे साक्षी हो।

क्या मेरे अलावा कोई और भगवान है? नहीं, कोई और चट्टान नहीं है। मैं किसी को नहीं जानता। अब, वह उन लोगों की व्यंग्यात्मक निंदा करता है जो मूर्तियाँ बनाने के लिए इतने मूर्ख हैं।

जो लोग मूर्तियाँ बनाते हैं, वे सब बेकार हैं, और जो चीज़ें वे संजोते हैं, वे बेकार हैं। जो लोग उनके लिए बोलते हैं, वे अंधे हैं। वे अपनी शर्म से अनजान हैं।

कौन भगवान को आकार देता है और एक मूर्ति बनाता है जो उसे कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकती? पद 12 में, लोहार एक औज़ार लेता है और उसे कोयले में चलाता है। वह हथौड़ों से एक मूर्ति बनाता है। वह अपनी भुजा की शक्ति से उसे गढ़ता है।

क्या आपको यहाँ कोई तस्वीर मिल रही है? सुबह 9.30 बजे भी अपनी मानसिक कल्पना का इस्तेमाल करें। क्या आपको पता है कि एक फोर्ज कैसा दिखता है? वहाँ बहुत गर्मी होती है। आप इस धातु को उस बिंदु तक ले जा रहे हैं जहाँ आप इसे हथौड़े से पीट सकते हैं, और यह लचीला है।

आप इसे जिस तरह से चाहें आकार दे सकते हैं। यह आदमी कड़ी मेहनत कर रहा है, ठीक है? उसे भूख लगती है, उसकी ताकत कम हो जाती है। वह पानी नहीं पीता, उसे बेहोशी महसूस होती है।

यह सब धातु का एक टुकड़ा बनाने के लिए है। बढ़ई एक रेखा से नापता है, मार्कर से रूपरेखा बनाता है, छेनी से उसे खुरदरा बनाता है, कम्पास से उस पर निशान बनाता है, उसे एक आदमी के आकार में ढालता है, एक आदमी के पूरे गौरव के साथ, ताकि वह एक मंदिर में रह सके। देवदार के पेड़ों को काटता है, वगैरह, वगैरह।

उसमें से कुछ लकड़ी लेकर वह खुद को गर्म करता है। उसमें से कुछ लकड़ी लेकर वह आग जलाता है, रोटी पकाता है, लेकिन वह एक भगवान भी बनाता है और उसकी पूजा करता है। एक

मूर्ति बनाता है और उसे प्रणाम करता है। आधी लकड़ी वह आग में जलाता है। उस पर वह अपना भोजन बनाता है। अपना मांस भूनता है और पेट भरकर खाता है।

वह खुद को गर्म करता है और कहता है, आह, मैं गर्म हो गया हूँ, मुझे आग दिखाई दे रही है। बाकी बची हुई चीजों से वह एक मूर्ति बनाता है। वह उसके आगे झुकता है और पूजा करता है।

वह उससे प्रार्थना करता है और कहता है, मुझे बचा लो, तुम मेरे भगवान हो। क्या तुम समझ रहे हो कि यह कितना मूर्खतापूर्ण है? श्लोक 18: वे कुछ नहीं जानते, वे कुछ नहीं समझते। उनकी आँखों पर प्लास्टर लगा हुआ है इसलिए वे देख नहीं सकते और उनके दिमाग बंद हैं इसलिए वे समझ नहीं सकते।

कोई भी यह सोचने के लिए रुकता नहीं है कि इसका आधा हिस्सा मैं ईंधन के लिए इस्तेमाल करता हूँ और बाकी आधे हिस्से से मैं मूर्ति बनाता हूँ। वे बस यही कर रहे हैं, जिससे पता चलता है कि ये लोग कितने अंधे और बहरे हैं। तो, उस अंश में दो बातें चल रही हैं।

एक अंतर ईश्वर के बीच है, जो भविष्य बता सकता है, और मूर्तियाँ, जिन्हें ऐसा करने की चुनौती दी जाती है और वे ऐसा नहीं कर सकतीं। और निश्चित रूप से, यह उस अध्याय का बिल्कुल अंत है जहाँ वह फिर कहता है, मैं, प्रभु, ने सभी चीजें बनाईं, आकाश को फैलाया, झूठे भविष्यद्वक्ताओं के संकेतों को विफल किया, जो यरूशलेम के बारे में कहता है, वह आबाद रहेगा, जो कुसू के बारे में कहता है, वह मेरा चरवाहा है, और वह यरूशलेम के बारे में कहेगा, इसे फिर से बनाया जाए। और मूर्तियों को दी गई इस पूरी चुनौती का यहीं अंत होता है।

समझे? चलिए आगे बढ़ते हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यशायाह परमेश्वर की पवित्रता पर ध्यान केंद्रित करेगा। उसे कैसे बुलाया गया था? आज के दो पाठों पर वापस जाएँ।

यशायाह को कैसे बुलाया गया? केट, हाँ, वह मंदिर में है, है न? और वह भगवान को अपने सिंहासन पर देखता है, और साराफिम वहाँ हैं, और वे पुकार रहे हैं, पवित्र, पवित्र, पवित्र है सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर। और यशायाह कहता है, मैं एक बर्बाद व्यक्ति हूँ, मैं अशुद्ध होठों वाला व्यक्ति हूँ, मैं पृथ्वी पर क्या करने जा रहा हूँ? फिर साराफ आता है और उसके होठों को छूता है, और फिर उसे भगवान का वचन बोलने का आदेश दिया जाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि उसे भगवान की पवित्रता का एहसास है जो कि ज्यादातर अन्य लोगों के पास नहीं है।

उसने उस पवित्र स्थान में परमेश्वर को देखा है। और याद रखें कि पवित्र स्थान विशेष रूप से उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति, उनके बीच परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति के लिए था। लेकिन यह अभिव्यक्ति बार-बार सामने आती है।

आमतौर पर, आमतौर पर नहीं, लेकिन अक्सर इस्राएल के उद्धारक के साथ संयोजन में उपयोग किया जाता है। तो इस्राएल का पवित्र, इस्राएल का उद्धारक, वे एक साथ चलते हैं। खैर, यह हमें हमारे अगले बिंदु पर ले जाता है, जो बस यही है।

यशायाह को शायद नए नियम में इतनी बार उद्धृत किया गया है क्योंकि यह यशायाह ही है जो हमें इस्राएल के ईश्वर की ओर से यह आलिंगन देता है। इस्राएल की सीमाओं से परे लोगों का ईश्वर। यह एक सार्वभौमिक संदेश है।

यह गैरयहूदियों तक पहुँच रहा है। आइए थोड़ा सा पढ़ें। अध्याय दो, श्लोक दो।

हर कोई मंदिर की ओर उमड़ेगा। सभी राष्ट्र मंदिर में आएंगे। और फिर इसके बारे में सोचिए।

और हमारे मंदिर विषय को याद रखें जो अध्याय 56 में भी जारी है, एक ऐसा अंश जिससे मैं शर्त लगाता हूँ कि आप परिचित होंगे। छंद छह, विदेशी, ठीक है, इस्राएली नहीं, विदेशी जो प्रभु की सेवा करने, प्रभु के नाम से प्रेम करने, उसकी आराधना करने के लिए खुद को प्रभु से बांधते हैं, वे सभी जो सब्त को अपवित्र किए बिना रखते हैं, उन्हें मैं अपने पवित्र पर्वत पर लाऊंगा। उन लोगों के लिए अद्भुत वादा जो कम से कम, तब बाहर से, दूसरे पर विचार किए गए थे।

परमेश्वर कह रहा है, नहीं, वे इसका हिस्सा बनने जा रहे हैं। मैं उन्हें अपने पवित्र पर्वत पर ले आऊंगा; मैं उन्हें अपने प्रार्थना के घर में आनन्द दूँगा। उनकी होमबलि और बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएँगे।

क्योंकि मेरा घर सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। आपने इसे फिर कहाँ सुना? यह किसने कहा? सही उत्तर है? हाँ, कब? याद है जब वह मंदिर को साफ कर रहा था? और वह कहता है कि तुमने इस जगह को लुटेरों का अड्डा बना दिया है। इसे सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर माना जाता है।

वह यिर्मयाह सात को एक साथ रख रहा है, डाकुओं के अड्डे के बारे में वह आरोप, हम अगले सप्ताह ऐसा करने जा रहे हैं। और यह वादा, यीशु के दिनों में मंदिर के चारों ओर एक विशाल प्रांगण था, एक विशाल प्रांगण, अन्यजातियों का प्रांगण, और वे वहाँ आ सकते थे, ठीक है? तो लोगों को निमंत्रण था। यशायाह के पास एक संदेश है, जैसा कि मैंने कहा, लोगों तक पहुँचने के बारे में।

और फिर हमारे पास एक तीसरी बात है। यह तीसरी बुलेट वास्तव में हमें अगली बुलेट की ओर ले जाएगी, अगर आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं। लेकिन अगर आपके पास अपनी बाइबल है, तो मैं आपके लिए अध्याय 49, पद छह, पद छह का दूसरा भाग पढ़ने जा रहा हूँ, जिसमें प्रभु के सेवक के बारे में बात की गई है, जिसके बारे में हम बस कुछ ही पल में वापस आएंगे और इस पर थोड़ा विस्तार से चर्चा करेंगे।

लेकिन छठी आयत का दूसरा भाग कहता है, मैं तुम्हें अन्यजातियों के लिए ज्योति बनाऊंगा। अब, सेवक कौन है, यह एक अलग मुद्दा है। हम इस पर चर्चा करेंगे।

लेकिन मैं तुम्हें अन्यजातियों के लिए ज्योति बनाऊंगा, ताकि तुम मेरे उद्धार को पृथ्वी के छोर तक पहुंचा सको। कोई आश्चर्य नहीं कि सुसमाचार के लेखक यशायाह के संदेश को लेने के लिए प्रेरित हुए। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु यशायाह का इतना उल्लेख करते हैं।

मेरा उद्धार, परमेश्वर की वाणी, पृथ्वी के छोर तक। यह हमें सेवक के हमारे संपूर्ण विचार तक ले आता है। और यह एक और महत्वपूर्ण बात है जिसे मैं चाहता हूँ कि आप समझें।

यशायाह में सभी तरह के शानदार धर्मशास्त्र हैं। ठीक है? यशायाह में प्रभु का सेवक दिखाई देता है। आप सभी, हम सभी, शायद यहाँ की अंतिम पंक्ति से बहुत परिचित हैं, पीड़ित सेवक, जिसे यशायाह चित्रित करता है, वध के लिए ले जाया गया।

और हम कुछ ही देर में इसके कुछ अंश पढ़ने जा रहे हैं। लेकिन अध्याय 42 से शुरू करके, हम इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह कहीं से अचानक नहीं आता।

वास्तव में, यशायाह का यह पूरा भाग गीतों का एक चक्र है, और उन्हें सेवक गीत कहा जाता है। मैं बस कुछ स्थानों पर चर्चा करना चाहता हूँ। सेवक के कार्य, खैर, मैं आपको उनमें से एक पढ़कर सुनाता हूँ।

सेवक का एक काम, वास्तव में, अन्यजातियों के लिए एक ज्योति बनना है। लेकिन आप जानते हैं कि उसे और क्या करना है? उसे राष्ट्रों को भी न्याय दिलाना है, ठीक है? न्याय एक वास्तविक मुद्दा है। तो, अध्याय 42 में, मुझे अध्याय 42 पर जाना चाहिए।

इसे पढ़ें। यह मेरा सेवक है, जिसे मैं देखता हूँ, मेरा चुना हुआ, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। वैसे, आप में से जो लोग, अच्छा, आप सभी ने कभी न कभी न्यू टेस्टामेंट पढ़ा होगा, है न? जब यीशु का रूपान्तरण होता है, तो स्वर्ग से आवाज़ आती है, यह मेरा सेवक है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।

उसकी बात सुनो। यशायाह के इस भाग को उद्धृत करते हुए या यशायाह के इस भाग की ओर संकेत करते हुए। किसी भी हालत में, यह मेरा सेवक है।

मैं उस पर अपनी आत्मा डालूँगा। वह राष्ट्रों के लिए न्याय लाएगा। न्याय, न्याय, न्याय।

यह उन कामों में से एक है जो एक सेवक को करना चाहिए। और वह आगे बढ़ता है और उसमें से कुछ को विस्तार से बताता है, और कहता है कि वह तब तक नहीं रुकेगा जब तक कि वह वास्तव में पृथ्वी पर न्याय स्थापित नहीं कर लेता। लेकिन फिर यह आगे बढ़ता है।

छठी आयत का मध्य भाग। मैं तुम्हें सुरक्षित रखूँगा। मैं तुम्हें लोगों के लिए वाचा बनाऊँगा और अन्यजातियों के लिए ज्योति, अंधों की आंखें खोलने और बंदियों को जेल से मुक्त करने के लिए बनाऊँगा।

तो प्रकाश भी इसका हिस्सा है। न्याय और प्रकाश। ये सेवक के कार्य हैं, और वे काफी महत्वपूर्ण हैं।

अब, दुर्भाग्य से, सेवक, जिसे इस्राएल कहा जाता है, इस्राएल को सेवक बनने के लिए बुलाया गया है। यही उनकी भूमिका है। लेकिन वे असफल हो जाते हैं।

उसी अध्याय की 18वीं आयत: हे बहरो, सुनो। हे अंधों, देखो और देखो।

मेरे सेवक के अलावा कौन अंधा है? उफ़। मेरे भेजे हुए दूत की तरह बहरा। भगवान के सेवक की तरह अंधा।

यहाँ कुछ गड़बड़ है। यह सेवक, इस्राएल, वह नहीं कर रहा है जिसके लिए उसे बुलाया गया था क्योंकि सेवक हमारे जैसे ही त्रुटिपूर्ण, पतित, पापी, विद्रोही मनुष्यों से बना है जिन्हें हर किसी की तरह ही छुड़ाए जाने की आवश्यकता है। और यही दिलचस्प बात है।

अब, अध्याय 49 पर जाएँ। जहाँ लिखा है, मैं तीसरी आयत के साथ आगे बढ़ने जा रहा हूँ। हे इस्राएल, तू मेरा सेवक है, मैं तुझमें अपनी महिमा प्रदर्शित करूँगा।

यह थोड़ा आगे बढ़ता है, लेकिन फिर यह कहता है, और यहाँ वह मुख्य बात है जिसे मैं चाहता हूँ कि आप समझें, ठीक है, पाँचवें श्लोक से शुरू करते हैं। अब प्रभु कहते हैं, जिसने मुझे गर्भ में अपना सेवक बनाने के लिए बनाया - अगली पंक्ति समझ में आई? ध्यान से सुनिए।

जागो। उसने मुझे गर्भ में अपना सेवक बनाया, ताकि याकूब को अपने पास वापस लाऊँ और इस्राएल को अपने पास इकट्ठा करूँ। अब किसी को इस्राएल को बहाल करने के लिए सेवक के रूप में नियुक्त किया जा रहा है, जो अंधा और बहरा था, जैसा कि हम अध्याय 42, श्लोक 18 और 19 में पढ़ते हैं।

तो, अब सेवक इस्राएल से एक व्यक्ति होने जा रहा है, है न? और फिर यह कहता है, मैं प्रभु की नज़रों में सम्मानित हूँ। मेरा परमेश्वर मेरी ताकत रहा है। परमेश्वर कहता है कि याकूब के गोत्रों को पुनर्स्थापित करने के लिए मेरा सेवक बनना तुम्हारे लिए बहुत छोटी बात है।

यह शुरुआती बात है। यीशु पहले आए, और उन्होंने क्या कहा? मैं यहाँ इस्राएल की खोई हुई जनजातियों को पुनःस्थापित करने के लिए आया हूँ। लेकिन यशायाह पहले ही कह चुका है, ऐसा करना बहुत छोटी बात है।

मैं भी यही करूँगा, और अब मैं वही पढ़ने जा रहा हूँ जो मैंने अभी कुछ देर पहले तुम्हें पढ़ा था। मैं तुम्हें अन्यजातियों के लिए एक ज्योति बनाऊँगा ताकि तुम मेरे उद्धार को पृथ्वी के छोर तक पहुँचा सको। इस्राएल का पवित्र परमेश्वर, उद्धारकर्ता, यहोवा यही कहता है।

तो, इन अध्यायों में, हम इस्राएल की ओर से एक ज़रूरत देखते हैं जो मूल रूप से सेवक था। परमेश्वर उस ज़रूरत को किसी ऐसे व्यक्ति के ज़रिए पूरा करना चुनता है जिसे वह इस्राएल और याकूब को बहाल करने और इकट्ठा करने के लिए नियुक्त करने जा रहा है। और फिर बेशक, हम पीड़ित सेवक को उठाते हैं, जो वह साधन है जिसके ज़रिए यह किया जाता है।

अध्याय 52 के अंत में, मेरा सेवक बुद्धिमानी से काम करेगा। उसे ऊपर उठाया जाएगा और उसे बहुत ऊंचा किया जाएगा। और फिर, बेशक, अध्याय 53 में ऐसी चीजें होती हैं जो हमारे लिए

बहुत परिचित हैं, लेकिन शायद उस समय लोगों के लिए थोड़ी चौंकाने वाली रही होगी क्योंकि वे एक मसीहा व्यक्ति के बारे में नहीं सोचेंगे जो उन्हें इस विशेष तरीके से बचाएगा।

तिरस्कृत और अस्वीकृत, दुखों से भरा हुआ एक व्यक्ति, पीड़ा से परिचित, हमारी दुर्बलताओं को उठाया, हमारे दुखों को उठाया, परमेश्वर द्वारा त्रस्त, हमारे अपराधों के लिए छेदा गया, हमारे अधर्म के लिए कुचला गया। हमें शांति दिलाने वाली सज़ा उस पर थी। उसके घावों से, हम चंगे हुए हैं।

हम सब भेड़ों की तरह भटक गए हैं। प्रभु ने हम सब के अधर्म का बोझ उस पर डाल दिया है। यही पीड़ित सेवक है।

ऐसा ही होता है। आप सभी जानते हैं कि अगर आप चर्च में पले-बढ़े हैं, तो हम इसे हर समय सुनते हैं। लेकिन सोचिए कि उस विशेष समय-सीमा में दर्शकों के लिए इसका क्या मतलब होगा।

हाँ, केलिन। वे इसे अभी भी इज़राइल, या राजा हिजकिय्याह के संदर्भ में पढ़ते हैं, यह एक और व्यक्ति है जिसे अक्सर उस व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जिसके बारे में यह लिखा गया है। वे इसके साथ संघर्ष करते हैं।

वे वास्तव में इसके साथ संघर्ष करते हैं। हाँ, सारा। आदिवासी पहचान, 12 जनजातियाँ, इन्हें कैसे जीवित रखा जाता है? अच्छा सवाल है।

परंपरा, यह तथ्य कि वे यह जानते हैं। हम अक्सर 10 खोई हुई जनजातियों का उल्लेख करते हैं, और यह इतना आसान नहीं है, क्योंकि उत्तरी राज्य के लोग अभी भी उत्तरी राज्य में रह रहे हैं। वे सभी वहाँ से निकाले नहीं गए हैं, और अशशूर के निर्वासन के बाद भी आशोर, ज़ेबुलुन, इस्साकार की जनजातियों के संदर्भ हैं।

इसलिए, मेरा सुझाव है कि यह शायद सिर्फ़ परंपरा है, और शायद काफी अच्छी परंपरा है। आप में से जो लोग यहूदियों के बारे में कोई कहानी जानते हैं, जो पिछली सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका आए थे, उन्हें अपने वंश के बारे में अच्छी जानकारी है जो बहुत पहले से चली आ रही है। यह बहुत दिलचस्प है।

अगर वे धार्मिक हैं। आप जानते हैं, अगर वे धार्मिक नहीं हैं, तो शायद इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, लेकिन अगर वे धार्मिक हैं। खैर, हमें आगे बढ़ना होगा, क्योंकि हम बात करना चाहते हैं।

यह हमें इस बात पर एक त्वरित नज़र डालने के लिए प्रेरित करता है कि यशायाह मसीहाई व्यक्ति के बारे में क्या कहता है। पीड़ित सेवक यहाँ स्पष्ट रूप से बड़ी तस्वीर है, लेकिन कुछ अन्य स्थान भी हैं जो समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यशायाह ने सेवक शब्द का उपयोग किया है।

वह शाखा शब्द का प्रयोग करता है। वह दाऊद के वंशज, दाऊद के पुत्र और फिर धर्मी राजा शब्द का भी प्रयोग करता है। और यहाँ मुख्य अंश हैं, और मैं पहले दो और फिर सबसे आखिरी अंश के बारे में बात करने जा रहा हूँ क्योंकि हम पहले ही सेवक पर बात कर चुके हैं।

अब, पहले दो को समझने के लिए, हमें, चाहे आप मानें या न मानें, थोड़ा पीछे जाकर इतिहास को समझना होगा। क्या आपको यह पसंद नहीं आया? यशायाह का सातवाँ अध्याय। आहाज का राजा, वह अच्छा है या बुरा? अच्छा नहीं, है न?

अब, आहाज को अपने शासनकाल में एक समय पर जिस चीज़ से जूझना पड़ा, वह उत्तरी राज्य और सीरिया के बीच राजनीतिक गठबंधन से एक बहुत गंभीर खतरा था। क्या आपको याद है जब हम 2 राजा 16 पढ़ रहे थे, और मैंने कहा, इसे याद रखें? ठीक है, हम यहाँ हैं। उत्तरी राज्य और सीरिया ने आहाज पर हमला कर दिया है।

यह अध्याय सात का संदर्भ है। प्रभु यशायाह से कहते हैं, तुम बाहर जाओगे, और आहाज का सामना करोगे। अध्याय सात, श्लोक तीन।

आप और आपका बेटा शार्याशूब, आहाज से मिलते हैं, उसके साथ थोड़ी बातचीत करते हैं, और मूल रूप से उसे बताते हैं, ऐसा नहीं होने वाला है। ऐसा नहीं होगा। श्लोक सात और आठ।

65 साल के अंदर एप्रेम इतना टूट जाएगा कि वह एक राष्ट्र नहीं रह जाएगा। एप्रेम का मुखिया सामरिया है, सामरिया का मुखिया सिर्फ रामल्याह का बेटा है। दूसरे शब्दों में, इसके बारे में इतनी चिंता मत करो।

अब, 65 साल, यह एक लंबा समय है। आप लोग उस समय 85 साल के हो जाएँगे, आज से 65 साल बाद। तो, आप जानते हैं, शायद आहाज यहाँ और अभी कुछ और देखना चाहता है।

यशायाह आगे बढ़कर उससे कहता है, यदि तुम अपने विश्वास में दृढ़ नहीं रहोगे, तो तुम कभी भी खड़े नहीं रह पाओगे। और फिर वह कहता है, प्रभु से कोई संकेत मांगो। क्या तुम्हें वह संकेत व्यवसाय याद है जिसके बारे में हमने बात की थी? जब कोई भविष्यवाणी दी गई थी जो लंबी अवधि की थी, जैसे कि योशियाह के बारे में, उदाहरण के लिए, एक अल्पकालिक बात थी जिसे लोग यहाँ और अभी देख सकते थे, वे जानते थे कि दीर्घकालिक बात होने वाली है।

खैर, प्रभु से कोई संकेत मांगो। और आहाज कहता है, मैं ऐसा करने के बारे में नहीं सोचूंगा, मैं परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेना चाहता। और यशायाह कहता है, हे दाऊद के घराने, यह सुनो, परमेश्वर के धैर्य की परीक्षा मत लो।

श्लोक 14, प्रभु तुम्हें एक संकेत देगा, चाहे तुम इसके लिए पूछो या नहीं। यहाँ संकेत है, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। क्या आपने इसे पहले सुना है? यह कहाँ दिखाई देता है? मैथ्यू के सुसमाचार में, है ना? और हम जानते हैं कि इम्मानुएल नाम का अर्थ है हमारे साथ परमेश्वर।

लेकिन इस संकेत के बारे में यह सब क्या है? मुझे लगा कि मैंने अभी कहा कि संकेत कुछ ऐसा होना चाहिए था जो उन्हें आश्वासन दे कि अब से 65 साल बाद, चीजें सच होने जा रही हैं। अगर यह तब तक सच नहीं होता जब तक कि वर्जिन मैरी द्वारा यीशु का जन्म नहीं हो जाता, तो क्या हो

रहा है? वर्जिन मैरी के लिए। मैं इसे इस तरह समझाता हूँ और अगर आप चाहें तो हम बाद में इस पर बहस कर सकते हैं।

मुझे लगता है कि यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि ईश्वर ने अपनी पूर्ण आश्चर्यजनक संप्रभुता में, जैसा कि वह शास्त्रों को प्रेरित करता है, न केवल इस स्थिति का वर्णन करने के लिए, बल्कि उस स्थिति का वर्णन करने के लिए भी सही शब्द चुना है जो लगभग 700 साल बाद घटित होगी जब यीशु का गर्भाधान हुआ और वह एक कुंवारी से पैदा हुआ। और यहाँ मैं सुझाव देता हूँ कि यह कैसे काम करता है। आपके NIV में जिस शब्द का अनुवाद कुंवारी के रूप में किया गया है, यदि आप एक अलग अनुवाद पढ़ते हैं, तो आप एक युवा महिला को देख सकते हैं, और इसका अर्थ दोनों हो सकता है।

यह पुराने नियम में कुंवारी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला आम शब्द नहीं है। यह बेतुलाह है। अगर आप वाकई सिर्फ कुंवारी कहना चाहते हैं।

यहाँ अल्मा शब्द का इस्तेमाल किया गया है और इसका मतलब दोनों हो सकता है। यह बहुत कम इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। इसे सही तरीके से चुना गया है।

मैं कहूँगा कि इसे बहुत ही खूबसूरती से चुना गया है ताकि यह इस स्थिति को कवर करे और यह उस स्थिति को कवर करे जो तब घटित होगी जब यीशु गर्भ में आएगा और जन्म लेगा। यशायाह की पत्नी का पहले से ही एक बच्चा है। हम यह जानते हैं।

उसका नाम शियर- याशूब है, जिसका अर्थ है कि बचे हुए लोग वापस आएँगे। वह फिर से गर्भवती हो जाती है। उसका एक और बच्चा होता है।

ध्यान दें कि यह अंश आगे क्या कहता है। उस लड़के से पहले, मैं श्लोक 16 में हूँ, इससे पहले कि वह लड़का गलत को अस्वीकार करना और सही को चुनना सीखे, उन दो राजाओं की भूमि, जिनसे तुम डरते हो, बर्बाद हो जाएगी। दूसरे शब्दों में, तुम्हारी पत्नी को एक बेटा होने वाला है।

उसका नाम इम्मानुएल रखिए, जिसका मतलब है ईश्वर हमारे साथ है। और जब वह 13 या 14 साल का हो जाए, तो वे राजा जिनके बारे में आप चिंतित हैं, वे चले जाएँगे। यही संकेत है।

अब मैं किसी भी तरह से इस तथ्य को कम नहीं आंक रहा हूँ कि यह भी, जैसा कि मैंने कहा, अपनी पूर्ण पूर्ति की ओर आगे देखता है क्योंकि मैथ्यू इसका हवाला देता है और वह उस बिंदु पर पुराने नियम के यूनानी अनुवाद का हवाला देता है, जिसमें कुंवारी के लिए यूनानी शब्द, पार्थेनोस का उपयोग किया गया है। और यहाँ दूसरी दिलचस्प बात है और फिर हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। यह यहीं नहीं रुकता।

मैं ऊपर क्या कहना चाहता हूँ? जब आप अध्याय आठ पढ़ते हैं, तो इस संदर्भ से अगले संदर्भ तक निरंतरता पर ध्यान दें, ईश्वर हमारे साथ, ईश्वर हमारे साथ, इम्मानुएल। यह वह विषय है जो बार-बार आता है।

अध्याय आठ, श्लोक आठ, हे इम्मानुएल, तुम्हारा देश, श्लोक 10. अपनी रणनीति बनाओ, यह नहीं चलेगा क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है। वह इम्मानुएल है।

और फिर जब आप श्लोक 18 और उसके बाद पढ़ते हैं, तो मैं यहाँ हूँ, यशायाह बोल रहा हूँ, मैं और वे बच्चे जिन्हें प्रभु ने मुझे दिया है, हम इस्राएल में सर्वशक्तिमान प्रभु की ओर से चिह्न और प्रतीक हैं जो सियोन पर्वत पर निवास करते हैं। समझे? इम्मानुएल का वह पूरा विचार इस अध्याय में बुना गया है, उस बच्चे का जिक्र करते हुए। और वैसे, जैसे-जैसे आप अध्याय 10 को पढ़ते हैं, वहाँ वह विषय है, एक अवशेष वापस आएगा, एक अवशेष वापस आएगा, एक अवशेष वापस आएगा।

याशूब का अनुवाद है। तो, वह कह रहा है, मेरे बच्चों, वे संकेत और प्रतीक हैं। सुनो क्या हो रहा है।

अब, वे न केवल संकेत और प्रतीक हैं, बल्कि श्लोक 20 में यह भी कहा गया है कि, यदि वे इस वचन के अनुसार नहीं बोलते हैं, तो उनमें कोई प्रकाश नहीं है। प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश। अब हम अध्याय नौ शुरू करते हैं।

अन्धकार में चलने वाले लोगों ने, पद दो में, एक महान प्रकाश देखा है। यह हमेशा एडवेंट में पढ़ा जाता है, है न? मृत्यु की छाया की भूमि में रहने वालों पर, एक प्रकाश चमका है। और फिर यह आगे बढ़ता है, योद्धाओं के जूते जलाए जाने और युद्ध के सभी औजारों को नष्ट किए जाने की बात करता है।

और फिर, हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है। बच्चा, ठीक है? हमें एक बेटा दिया गया है। सरकार उसके कंधों पर होगी।

उसे अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा। ये दिव्य उपाधियाँ हैं। अध्याय सात में जिस बच्चे के बारे में बात की गई है, इम्मानुएल, यशायाह के बच्चों में से एक, मैं सुझाव दूंगा, शुरू में।

लेकिन अध्याय नौ में बच्चे की ओर देखते हुए, जो इम्मानुएल भी है, जिसके पास देवता की सभी उपाधियाँ होंगी, वह बच्चा जो ईश्वर है। ठीक है, थीम वहाँ एक साथ समाप्त होती है। आपको वास्तव में तीनों अध्यायों को देखना चाहिए, ताकि यह काम कर सके।

क्या यह समझ में आता है? कुछ हद तक? खैर, हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए। शांति भी इसका एक हिस्सा है। हमने अध्याय 53 के बारे में बात की है।

अध्याय 61 में, मैं इसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा, सिवाय इसके कि मैं कहूँगा कि परमेश्वर बोल रहा है, "प्रभु की आत्मा मुझ पर है, ताकि मैं सुसमाचार सुनाऊँ," "बन्धुओं को छुड़ाऊँ," इत्यादि।" और यही वह अंश है जिसे यीशु ने नासरत के आराधनालय में उद्धृत किया था, और वह खड़ा होकर भविष्यवक्ता का पाठ पढ़ता है, लूका अध्याय चार। और आप अपने नए नियम

की कक्षा में इससे गुज़र चुके हैं। मैं यशायाह के बारे में बस इतना ही कहने जा रहा हूँ क्योंकि हमें अभी भी मीका और योएल के बारे में बात करनी है।

तो ये लीजिए। प्रभु आपसे क्या चाहते हैं? इसका उत्तर क्या है? मैं कुछ अंश सुन रहा हूँ। आइए, न्याय से शुरुआत करें।

तुम्हें इस पर दया करनी चाहिए। तुम्हें इसे याद रखना चाहिए। न्याय करो, दया से प्रेम करो, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलो।

यह जान लो, सिर्फ़ अपने लिए। तुम्हें पता है, यही परमेश्वर हमसे चाहता है। न्याय करो, दया से प्रेम करो, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलो।

अध्याय छह में इसका उल्लेख मिलता है। मीका की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक रूप से यशायाह से मेल खाती है। जैसा कि मैंने कहा, यशायाह यरूशलेम में रहता है।

मीका वास्तव में थोड़ी अधिक नाजुक स्थिति में है क्योंकि शेफेला में आपके पास ये दुश्मन पहाड़ी क्षेत्र में अपना आक्रमण शुरू कर रहे हैं और यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के लिए ऊपर जा रहे हैं। इसलिए वहाँ जीवन थोड़ा अधिक नाजुक है। जब आप मीका को पढ़ते हैं, तो आप देखेंगे कि अध्याय चार यशायाह के अध्याय दो जैसा ही लगता है।

वे उस विशेष बिंदु पर एक ही भविष्यवाणी साझा कर रहे हैं। खैर, यहाँ मीका के संदेश हैं, और मैं इन्हें जल्दी से जल्दी पढ़ने जा रहा हूँ क्योंकि मैं जोएल तक पहुँचना चाहता हूँ। जोएल में कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जिनके बारे में हमें बात करने की ज़रूरत है।

अगर आपको और कुछ नहीं सूझता, तो आप जानते हैं, यहाँ हमारी छोटी सी परीक्षा है। हम मीका को कैसे याद रखें? ओह, मैं उन सभी छोटे-मोटे भविष्यवक्ताओं के बीच मीका को कैसे याद रखूँगा? नीचे की पंक्ति पर गौर करें। मीका ही वह व्यक्ति है जो भविष्यवाणी करता है कि मसीहा बेथलेहम में जन्म लेने वाला है।

याद कीजिए जब बुद्धिमान लोग आते हैं, और वे यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि यह तारा उन्हें कहाँ ले जा रहा है। वे हेरोदेस के दरबार में पहुँचते हैं, और हेरोदेस वहाँ सभी बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाता है। टोरा को जानने वाले लोग कहते हैं, ओह, यह बेथलेहम है, और वे मीका के पाँचवें अध्याय का हवाला देते हैं, और बेशक, वे वहाँ नहीं जाते, दिलचस्प बात यह है कि, लेकिन मीका वहाँ जाता है।

मीका को उसी तरह याद रखें। ठीक है, मसीहा का जन्मस्थान। बेथलेहम, एप्राता, यद्यपि तुम यहूदा के कुलों में छोटे हो, फिर भी तुममें से एक ऐसा व्यक्ति निकलेगा जिसका उद्भव प्राचीन काल से, अनंत काल से है।

और मीका अध्याय पाँच में आगे कहा गया है, वह हमारी शांति होगी। मैं एक अंश लिखने जा रहा हूँ जिसे पॉल इफिसियों के अध्याय दो में उद्धृत करने जा रहा है। तो, मीका को इस तरह याद रखें।

जाहिर है, ये अन्य चीजें भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, और ये वे विषय हैं जिन्हें हम सभी भविष्यवाणियों के साहित्य में देखते हैं। परमेश्वर न्याय करने आएगा। मानवीय पाप, हमारा पाप, परमेश्वर के लोगों का पाप, याद रखें, यही वह है जिससे मीका बात कर रहा है, उसका न्याय किया जाएगा।

और, आप जानते हैं, यह वही दुखद कहानी है जो हम सभी भविष्यवक्ताओं में पढ़ते हैं, क्योंकि वे हमारे जैसे लोगों से बात कर रहे हैं। पाखंड, झूठ, मिथ्यात्व, अन्याय, वगैरह, वगैरह, वगैरह। लेकिन उम्मीद भी वहीं है।

क्या हमें जोएल के बारे में बात करनी चाहिए? मुझे पता है कि मैंने मीका के बारे में बहुत जल्दी बात की। हाँ, केलिन। हाँ।

क्या इफिसियों की भविष्यवाणी सही है? हाँ, यह सही है। क्या इसका इस्तेमाल किया जाता है? क्या वे अब भी इसके बारे में ऐसा सोचते हैं? वास्तव में नहीं। डेविड के अलावा, मसीहा के बारे में उनका विचार, जो भी यहूदी धर्म में हो, एक तरह से अस्पष्ट है, यहाँ तक कि यीशु के दिनों में भी, इस बात के संदर्भ में कि वे कितने मसीहाओं की उम्मीद कर रहे थे।

लेकिन यह दाऊद का बेटा होने वाला था। यह दाऊद का बेटा होने वाला था। इसलिए, बेथलहम दाऊद का शहर है।

तो, क्या यह समझ में आता है? क्या यहूदियों को मसीहा की उम्मीद नहीं है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किसके बारे में बात कर रहे हैं। सवाल यह है कि क्या यहूदी अभी भी मसीहा की उम्मीद कर रहे हैं? हमें सावधान रहना चाहिए कि यहूदियों को उनके सोचने और विश्वास करने के तरीके के मामले में एकरूप न समझें। यहूदी धर्म के भीतर वे उतने ही विभाजित हैं जितने कि हम ईसाई धर्म के भीतर हैं, सैद्धांतिक मुद्दों और इसी तरह के अन्य मुद्दों के मामले में।

यरूशलेम में अभी यहूदियों का एक समूह है जो मंदिर के पुनर्निर्माण की योजना बना रहा है। वे इसके लिए सभी सामान इकट्ठा कर रहे हैं और मसीहा के आने का इंतज़ार कर रहे हैं। दूसरे लोग कहेंगे, नहीं, मसीहा जब आएगा तो मंदिर का निर्माण करेगा।

और इसे देखने के कई अन्य तरीके भी हैं। खैर, पूरे इतिहास में झूठे मसीहा हुए हैं। और जब आप यहूदी धर्म के इतिहास को देखते हैं, खासकर यूरोप में, तो कुछ बहुत ही दुखद चीजें हैं जो झूठे मसीहाओं का अनुसरण करने वाले लोगों के संदर्भ में सामने आती हैं।

अब, इसके जवाब में एक छोटा सा नोट यहाँ है। दिलचस्प बात यह है कि यीशु के दिनों में, जोसेफस हमें यह बताता है, बहुत सारे झूठे मसीहा, मसीहाई ढोंगी सामने आए। और यह कोई दुर्घटना नहीं थी।

वे दानिय्येल की किताब पढ़ रहे थे। दानिय्येल ने कुछ कालानुक्रमिक बातें बताईं, जिससे उन्हें लगा कि उस समय कोई व्यक्ति अवश्य ही आ रहा होगा। और निश्चित रूप से, ऐसा ही हुआ।

यीशु उस समय प्रकट होते हैं। हम दानिय्येल की पुस्तक में इस बारे में और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। ठीक है, क्योंकि दानिय्येल के अध्याय नौ में, हमें कालक्रम के संदर्भ में कुछ बहुत ही उपयोगी सुझाव मिले हैं।

और शायद यही कारण है कि ईसा पूर्व और ईसा पूर्व की पहली शताब्दियों में मसीहा होने का दावा करने वाले लोगों की संख्या में इतनी वृद्धि हुई है। खैर, मैं आपके लिए कुछ तस्वीरें लेकर आया हूँ, क्योंकि हम जोएल की ओर बढ़ रहे हैं। आप में से जो लोग पुरानी चीजों को पसंद करते हैं, मैं उन्हें नेशनल जियोग्राफिक का 1915 का संस्करण खोजने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। यह पत्रिका लंबे समय से चली आ रही है।

यह एक बेहतरीन लेख है। क्योंकि उस समय, अगर आप इसे बहुत पहले से नहीं पढ़ सकते हैं, तो यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो यरूशलेम में टिड्डियों के प्रकोप से गुज़रा था, उसने उस समय अपने पास मौजूद सभी उपकरणों से इसकी तस्वीरें खींची थीं, और नेशनल जियोग्राफिक के लिए एक शानदार लेख लिखा था कि टिड्डियों के प्रकोप से गुज़रना कैसा होता है। हम नहीं जानते कि यह कैसा होता है।

शायद सबसे बुरी चीज जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, वह है वे छोटे पतंगे जो आपके पेड़ों और पत्तियों को खा जाते हैं। लेकिन यह टिड्डियों के प्रकोप जैसा कुछ नहीं है। तो किसी भी हालत में, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ।

हाल ही में फिलिस्तीन में टिड्डियों के आने की तुलना बाइबिल में वर्णित प्राचीन आक्रमणों से की जा रही है। यहाँ एक टिड्डा है। क्या वे प्यारे नहीं हैं? ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं।

फिर से, यह व्यक्ति इस सामान की तस्वीरें खींच रहा है, और यहाँ हवा के झोंकों से टिड्डियाँ उड़ती हुई आ रही हैं। यहाँ वे ताड़ के पेड़ के तने पर हैं, जिस पर शायद किसी समय केले या खजूर थे, हाँ। वे कितने बड़े हैं? ऐसे ही, हाँ।

यह थोड़ा मुश्किल है। टिड्डियों की चार अलग-अलग किस्में हैं, और टिड्डियों के लिए चार अलग-अलग हिब्रू शब्द हैं जो सिर्फ़ जोएल की किताब में दिखाई देते हैं। चलिए आगे बढ़ते हैं।

अध्याय एक, श्लोक सात में मेरी दाखलताओं को बर्बाद करने और मेरे अंजीर के पेड़ों को बर्बाद करने की बात कही गई है। यहाँ एक पेड़ है, और यह टिड्डियों के हमले के बाद है। और यह बहुत लंबा समय नहीं था, है ना? वे घर की दीवार पर हैं।

स्वादिष्ट। हर जगह चढ़ना। और मेरे पास इस अगली चीज़ की तस्वीर नहीं है जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, लेकिन वह यह भी बताता है कि उस समय महिलाओं के लिए यह कैसा था, जैसा कि आप शायद जानते हैं, वे लंबे कपड़े पहनती थीं जिनके नीचे बहुत सारे पेटीकोट होते थे, है न? 1915 और 1920 के दशक में भी आपको इसी तरह कपड़े पहनने पड़ते थे, यहाँ तक कि यरूशलेम में भी।

और वह इस बारे में बात करता है कि कैसे इन गरीब महिलाओं के कपड़ों में टिड्डे घुस जाते हैं। रात में जब आप अपने कपड़े उतारते हैं तो उनमें से सैकड़ों टिड्डे बाहर निकल आते हैं। बढ़िया चीज़ें।

अब, मैं आपको यह दिखाता हूँ ताकि आपको टिड्डियों के प्रकोप का अंदाजा हो सके। हम उन शब्दों को देखते हैं और हम इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचते कि इसका वास्तव में क्या मतलब है। यह लोगों के लिए एक भयानक समय था क्योंकि यह वास्तव में ईश्वर के न्याय का प्रतीक था।

अब, मैं यहाँ तीन बातें कहना चाहता हूँ। जैसा कि जोएल लिख रहा है, वह न केवल एक वास्तविक टिड्डि महामारी के बारे में बात कर रहा है, जो कि काफी बुरी है, क्योंकि यह अनाज, नई शराब और तेल को नष्ट कर देगा, जो कि भूमि की तीन प्रमुख फसलें हैं और जो ईश्वर के आशीर्वाद का प्रतीक हैं। लेकिन वह इसे सेना के आक्रमण के समान भी बताने जा रहा है।

टिड्डियाँ न केवल वास्तविक टिड्डियाँ होंगी, बल्कि वे आक्रमणकारी सेना का प्रतीक भी होंगी। और ये सब मिलकर प्रभु के दिन का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमने आमोस के अध्याय पाँच में प्रभु के दिन के बारे में बात की थी।

योएल ने प्रभु के दिन का भी उल्लेख किया है, और प्रभु का वह दिन हिसाब-किताब का दिन है। उसके प्रकाश में, अध्याय दो में, लोगों को पश्चाताप करने, प्रभु की ओर मुड़ने, अपने दिलों को फाड़ने और अपने वस्त्रों को नहीं फाड़ने के लिए कहा गया है, वह कहता है। दूसरे शब्दों में, अपने वस्त्रों को फाड़ने का प्रतीकात्मक कार्य न करें, अपने दिलों को फाड़ें, अपने दिलों को फाड़ें, पश्चाताप करें, अध्याय दो, श्लोक 13।

लेकिन फिर वह कुछ और बहुत ही दिलचस्प करता है, और यहाँ हम पहुँचते हैं। और फिर, मुझे वह चीज़ ढूँढनी है। योएल, अध्याय दो, श्लोक 28 में।

उसके बाद, मैं अपनी आत्मा सब लोगों पर उंडेलूँगा, तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी। तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी। तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे।

उन दिनों में मैं अपने दासों पर, चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, अपनी आत्मा उंडेलूँगा। आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार दिखाऊँगा, खून और आग, धुँएँ के गुबार, वगैरह। श्लोक 32: जो कोई यहोवा का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा, क्योंकि सिंघोन पर्वत पर और यरूशलेम में उद्धार होगा।

जैसा कि मैंने आपको बताया, पतरस ने इसका हवाला दिया है। अब, प्रेरितों के काम अध्याय दो में क्या होता है? प्रेरितों के काम अध्याय दो में क्या चल रहा है? ठीक है, आपके पास वे सभी लोग हैं जो वहाँ एकत्र हुए हैं, और हम जानते हैं कि वे पूर्वी रोमन साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों से, वास्तव में रोम तक, और उससे भी आगे, पूर्वी भागों में जो कि फारस है और इसी तरह से एकत्र हुए हैं। वे सभी वहाँ हैं।

वे वहाँ क्यों हैं? इस विशेष अवसर पर ये सभी विदेशी देश के लोग यरूशलेम में क्यों बैठे हैं? पेंटेकोस्ट क्या है? यह एक यहूदी त्यौहार है, है न? सप्ताहों का पर्व, इसी के लिए वे वहाँ हैं। यह सप्ताहों का पर्व है। यह उन तीन तीर्थयात्रियों के त्यौहारों में से एक है।

सभी यहूदियों को आना चाहिए। इसलिए ये सभी लोग वहाँ हैं। और उस संदर्भ में, आपके पास पवित्र आत्मा का आगमन है जो प्रेरितों पर उतरता है और फिर वे पर्याप्त भाषाओं में बोलते हैं, बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करते हैं, और इसलिए, संदेश उन सभी लोगों तक उनकी अपनी भाषा में पहुँचने वाला है।

पतरस ने यह उद्धरण उद्धृत किया है। जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा। यही मुख्य पंक्ति है।

ध्यान दें कि भविष्यवाणी, स्वप्न और दर्शन के बीच में, और जो लोग प्रभु का नाम पुकारते हैं वे बच जाएँगे, कुछ अन्य चीजें हैं जो तब तक नहीं होने वाली हैं जब तक यीशु फिर से नहीं आते। वे खगोलीय संकेत जो उनके दूसरे आगमन से जुड़े हैं। तो, यह उसके बाद का एक लंबा समय है, वास्तव में उस संपूर्णता को शामिल करता है जिसे आप चर्च युग कह सकते हैं।

ठीक है, हमें रुकना चाहिए। फिर से, आप सुबह 8.45 बजे से ही शुरू कर सकते हैं, परीक्षा के लिए। खूब मन लगाकर पढ़ाई करें।